



## 125897 - वह अंतिम तशहूद भूल गया और सलाम फेर दिया

---

### प्रश्न

उस व्यक्ति की नमाज़ का क्या हुक्म है जो अंतिम तशहूद के लिए बैठा, लेकिन वह तशहूद के शब्द (दुआ) को पढ़ना भूल गया?

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

सर्व प्रथम :

अंतिम तशहूद और उसके लिए बैठना नमाज़ के दो रुकन (अनिवार्य अंग) हैं जिनके बिना नमाज़ शुद्ध (मान्य) नहीं होती है।

“जाद अल-मुस्तक्रना” में नमाज़ के अरकान (स्थंभों यानी उसके आवश्यक भागों) का वर्णन करते हुए कहा गया है : “और अंतिम तशहूद तथा उसके लिए बैठना।”

शैख़ इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह ने उसकी व्याख्या करते हुए कहा : उनका कथन “और अंतिम तशहूद” यही नमाज़ के स्तंभों में से दसवाँ स्तंभ है।

इसका प्रमाण : अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है, वह कहते हैं : “इससे पहले कि तशहूद हम पर अनिवार्य होता, हम कहा करते थे : अस्सलामो अलल्लाहि मिन इबादिह, अस्सलामो अला जिबराईला व मीकाईला, अस्सलामो अला फुलान व फुलान” (अल्लाह पर सलाम हो उसके बंदों की तरफ से, तथा सलाम (शांति) हो जिबरील और मीकाईल पर, तथा सलाम हो अमुक और अमुक पर।) [इसे दारुकुतनी ने सहीह इस्नाद के साथ वर्णन किया है]। इस हदीस में प्रासंगिक बिंदु “तशहूद के हमारे ऊपर अनिवार्य किए जाने से पहले” का वाक्यांश है।

यदि कोई कहने वाला कहता है : पहले तशहूद से हमारे कथन का खंडन होता है ; क्योंकि वह भी तशहूद है, इसके बावजूद पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे छोड़ दिया और सज्दा-ए-सह्व के द्वारा उसकी छतिपूर्ति की। और यह वाजिबात का हुक्म है (कि सज्दा-ए-सह्व के द्वारा उसकी छतिपूर्ति की जाती है), तो क्या अंतिम तशहूद भी उसी के समान न होगा?



तो इसका उत्तर यह है कि : नहीं, क्योंकि मूल सिद्धांत यह है कि दोनों तशहूद फ़र्ज (अनिवार्य) हैं, और पहला तशहूद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के द्वारा इस मूल सिद्धांत से निकल गया। क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उसे छोड़ दिया, तो सज्दा-ए-सह्व के द्वारा उसकी छतिपूर्ति की। इसलिए अंतिम तशहूद अपनी अनिवार्यता पर रुकन बाकी रहा।

और उनका यह कहना कि : "और उसके लिए बैठना [अर्थात अंतिम तशहूद के लिए]" यह नमाज़ का ग्यारहवाँ रुकन (स्तंभ) है। यानी अंतिम तशहूद के लिए बैठना नमाज़ का एक रुकन (अनिवार्य हिस्सा) है। इसलिए अगर हम यह मान लें कि एक व्यक्ति सज्दे से उठकर सीधा खड़ा हो जाए और तशहूद पढ़े, तो यह उसके लिए पर्याप्त नहीं होगा। क्योंकि उसने एक रुकन (स्तंभ) को छोड़ दिया, जो कि तशहूद के लिए बैठना है। अतः उसका बैठना आवश्यक है और यह कि तशहूद भी उसी बैठक में पढ़ना चाहिए। क्योंकि उन्होंने कहा : "उसके लिए बैठना" चुनाँचे बैठने को तशहूद से संबंधित किया है, ताकि उससे यह समझा जाए कि तशहूद को उसी बैठक में पढ़ना ज़रूरी है।"

“अश्-शर्हुल मुम्ते” (3/309) से उद्धरण समाप्त हुआ।

दूसरा :

नमाज़ के किसी रुकन (स्तंभ) को भूल जाने वाले व्यक्ति के संबंध में सामान्य नियम यह है कि उसे करना अनिवार्य है, अन्यथा उसकी नमाज़ सही (मान्य) नहीं होगी।

शैख इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह ने कहा : “अरकान (स्तंभ) अनिवार्य होते हैं और उनकी अनिवार्यता वाजिबात से भी अधिक होती है। लेकिन अरकान और वाजिबात के बाच अंतर यह है कि अरकान (स्तंभ) भूलने की स्थिति में समाप्त नहीं होता है। जबकि वाजिबात भूलने की स्थिति में समाप्त हो जाते हैं और सज्दा-ए-सह्व के द्वारा उनकी छतिपूर्ति की जाती है। जबकि अरकान का मामला इसके विपरीत है ; इसलिए जो व्यक्ति किसी रुकन (स्तंभ) को भूल गया, तो उसकी नमाज़ इसके बिना शुद्ध (मान्य) नहीं होगी।”

तथा उन्होंने कहा : “इस बात का प्रमाण कि अरकान (स्तंभों) की सज्दा-ए-सह्व के द्वारा छतिपूर्ति नहीं होती है, यह है कि : जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहर या अस्त्र की दो रकअत नमाज़ से सलाम फेर दिया, तो उसे पूरा किया और जो कुछ आपने छोड़ दिया था उसे अदा किया और सह्व का सज्दा किया। इससे पता चला कि अरकान सह्व (भूलने) की वजह से समाप्त नहीं होते हैं, और उन्हें करना आवश्यक होता है।”

“अश्-शर्हुल मुम्ते” (3/315, 323) से उद्धरण समाप्त हुआ।

इसके आधार पर, जो व्यक्ति अंतिम तशहूद को भूल गया है और सलाम फेर दिया है, तो यदि बहुत समय नहीं बीता है तो



वह फिर से जाकर बैठ जाएगा और तशहूद पढ़ेगा और फिर सलाम फेर देगा। फिर वह सह के लिए सज्दा करेगा और फिर दुबारा सलाम फेरेगा। लेकिन अगर एक लंबा समय बीत चुका है, तो वह नमाज़ को दोहराएगा।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।